

How to Do Jain Puja

जैन पूजा करने वाले ध्यान दें

1) भगवान के 9 अंग सिवाय दुसरे कही पर पूजा न करें।

पूजा करते वक्त एक अंग पर एक बारही तिलक करें ।

पाँच उंगलियोंकी पूजा न करे।

2) भगवान के लांछन या परिकर में हाथी पुतली इत्यादि हो तो उनकी पूजा नहीं करेयाने उनको तिलक नहीं लगावे। दोष के भागीदार न बने।

3) जिनालय में पहले मूलनायक भगवान फिर आस-पास में आरस के प्रतिमाजी, फिर पंच धातु प्रतिमाजी, फिर सिद्धचक्र, वीसस्थानक जी की पूजा करे।

4) फिर सिद्ध भगवंतोंकी पूजा करें ।

सिद्ध भगवंत अगर अरिहंत मुद्रा में हो तो ही नव अंग की पूजा करे।

अगर मुद्रा अलग हैं तो सिर्फ अंगुठे की पूजा करें ।

5) फिर गुरुमूर्ति की पूजा करे।

एवं अंत में सम्यग-दृष्टी शासन रक्षक देव-देवी के कपाल में दाहिने अंगूठे से तिलक करना होता है। देव देवी की पूजा नव अंग नहीं करते।

6) भगवान के एक अंग को सिर्फ एक बार ही तिलक करना होता है। ज्यादा बार करने से चन्दन के रेले उतरते हैं एवं भगवान को घसारा लगता है / अंग भंग की संभावना बनती है।

7) जो लोग दोनों हाथ से भगवान को पकड़कर माथा नवाते हैं या सिर लगाते हैं वो भी आशातना है, इस प्रकार सिर लगाने से हमारे शरीर का मैल, तेल, बाल या पसीना भगवान् को लगता है जो पापबंध का कारण बन जाता है।

आशातना से बचे, जिनाज्ञा पूर्वक धर्मोध्यमकरे यही ।